① (८३६-८८५ ई०) मिहिर भोज

B.A. II Hons History
Paper-III

Q- Whom do you consider as the greatest King of the Pratihara dynasty? Give reasons in support of your answer
or
Examine the career and achievement of Mihir Bhoja.

Ans- प्रतिहार वंश के अनेक राजाओं में सबसे प्रतापी राजा मिहिर भोज था, जो अपने पिता रामभद्र के पश्चात ८३६ ई० में गुर्जर-प्रतिहार वंश का स्वामी बना। वर्तमान अध्ययन का मुख्य स्रोत अभिलेख है जिसके आधार पर हमलोग इसके प्रतापी होने के संबंध में निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत करेंगे→

दौलतपुर अभिलेख में उसे प्रभास और ग्वालियर अभिलेख में आदिवराह की उपाधि से विभूषित किया गया है। वह अत्यन्त प्रतापी और पराक्रमी सम्राट था। उसने अपने पूर्वजों के शासन को फिर से संगठित और समृद्धशाली बनाने का प्रयत्न किया।

बुन्देलखंड पर पुनः विजय → मिहिर भोज के पिता के समय में बुन्देलखंड ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। यही कारण है कि कालंजर मंडल में नागभट्ट द्वारा दिए हुए दान की पुष्टि रामभद्र नहीं कर सका था परन्तु मिहिर भोज ने इसे पुनः प्रारम्भ कर दिया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बुन्देलखंड पर उसने पुनः अधिकार कर लिया और चन्देल राजा पराजित उसके अधीन हो सकता था।

राजपुताना पर विजय → बराह, दौलतपुर और कहला के लेखों से ज्ञात होता है कि उसने राजपुताना और कई अन्य प्रदेशों को अपने अधीन कर लिया। और मंडोर की प्रतिहार शाखा का राजा कक्कुक, जो नागभट्ट द्वितीय का सामंत था पुनः इस क्षेत्र का शासक बना। कक्कुर ने गौड़ों के विरुद्ध मुद्गगिरि में युद्ध किया था। उसका पुत्र बाउक था जिसने नन्दवल्ल और मयूर को मारकर ६ मंडलों के नरेशों को हराया था। बाउक भी पहले स्वतंत्र हो गया था परन्तु भोज ने उसे अपने अधीन कर

2

इस तरह राजपुताना के दक्षिणी भाग पर भोज के अधिकार का एक प्रमाण प्रतापगढ़ का अभिलेख भी है, जिसमें लिखा है →

"यो राज्ञामुपरिस्थित: ककुभतां रक्षार्थमुत्पादित:
ये नोन्ये: सुखभाजित क्षितिर्भुजा श्री भोज देवेन च"

जयपुर में प्राप्त चाटसु के अभिलेख से ज्ञात होता है कि मिहिर भोज ने हर्षराज गुहिल, जिसने गौड़ नरेश को पराजित किया था, का अभिनन्दन किया और उसने भेंट में कई घोड़े प्रदान किया।

पंजाब पर विजय → 'राजतरंगिणी' एवं पहोवा के अभिलेख से ज्ञात होता है कि पूर्व पंजाब का करनाल प्रदेश मिहिर भोज के अधिकार में था। परन्तु जब मिहिर भोज पूर्वी भारत के युद्ध में फंसा हुआ था उस समय कश्मीर के राजा शंकर वर्मन ने उस क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया। फिर भी करनाल प्रदेश का कुछ अंश मिहिर भोज के अधीन रहा।

पश्चिमी भारत पर विजय → ऊना ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि मिहिर भोज के एक सामन्त बलवर्मन ने विषढ़ को हराकर जज्जप और अन्य राजाओं को मारकर पृथ्वी को हूणों से मुक्त किया। डा० पुरी के मतानुसार बलवर्मन मिहिर भोज का सामन्त था और उसी की आज्ञा से काठियावाड़ प्रदेश में शासन कर रहा था। अतः परवर्ती मालवा के हूणों पर आक्रमण भी भोज की ही आज्ञा से हुआ होगा।

मध्य भारत पर विजय → मध्य भारत में ग्वालियर तथा देवगढ़ में जो लेख प्राप्त हुए हैं उनसे ज्ञात होता है कि देवगढ़ और ग्वालियर प्रदेश में भोज के प्रतिनिधि शासन कर रहे थे।

राष्ट्रकूटों से युद्ध → मिहिर भोज के समय में अमोघवर्ष और कृष्ण द्वितीय राष्ट्रकूट नरेश उज्जैन में शासन कर रहे थे परन्तु यह निर्बल शासक थे अतः मिहिर भोज ने उज्जैन पर अधिकार कर लिया। नर्मदा नदी तक अपना शासन बढ़ा लिया। कालान्तर में अमोघवर्ष के गुजरात के सामन्त ध्रुव द्वितीय ने मिहिर भोज को लड़ाई में हराकर भगा दिया।

राष्ट्रकूटों और भोज का युद्ध कई वर्षों

Scanned with CamScanner

तक चलता रहा और दोनों ही अवन्ति प्रदेश पर अपना अधिकार करने के लिए प्रयत्न करते रहे। इस प्रकार कभी राष्ट्रकूटों को सफलता मिलती और कभी मिहिर भोज को। यहां तक की मिहिर भोज के शासन के अंतिम वर्ष इसी झगड़े में बीते।

पालों से युद्ध → मिहिर भोज के समय में पाल वंश का शासक देवपाल बड़ा वीर और यशस्वी था। उसके विषय में जो अभिलेख प्राप्त हुए हैं उनसे ज्ञात होता है कि उसने हिमालय से लेकर विन्ध्याचल तक और उत्तर भारत की पूर्वी सीमा से लेकर पश्चिमी सीमा तक समस्त राजाओं से कर वसूल किया। बदल अभिलेख में बताया है कि उसने उत्कलों, हूणों, द्राविड़ों और गुर्जरों को पराजित किया था। इस लेख में कुछ अतिशयोक्ति प्रतीत होती है किन्तु भी देवपाल की शक्ति को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि भोज और पालों के युद्ध में दोनों पक्षों को कभी सफलता और कभी विफलता मिलती होगी। अंतिम विजय के विषय में इतिहासकारों में मत भेद है। ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार भोज ने देवपाल पुत्र को अंत में परास्त किया।

अन्य विजय → मिहिर भोज ने कई और प्रदेश भी जीते थे। उसने करनाल और उसके पश्चिमी दक्षिणी सौराष्ट्र तक छापे मारे थे। अरब यात्री सुलेमान ने उसकी विशाल सेना शासन की योग्यता का वर्णन किया है। इतिहासकार मुखर्जी लिखते हैं कि उसके शासन काल में प्रतिहार शक्ति अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई थी।

इतिहासकार कृष्ण चौधरी का मत है कि जीवन के अंतिम काल में मिहिर भोज ने शासन भार अपने पुत्र को सौंप दिया और कुछ काल के लिए तीर्थ यात्रा को चला गया।

भोज प्रतिहार वंश का सबसे प्रतिभाशाली शासक था। उसका राज्य हिमालय की तराई से लेकर बुन्देलखंड और कौशाम्बी तथा पूरब में पाल राज्य की पश्चिमी सीमा से लेकर सौराष्ट्र तक फैला हुआ था। राजस्थान का भी बहुत बड़ा अंश उसके अधीन था। उसकी सेना

की प्रशंसा प्रसिद्ध यात्री सुलेमान ने निम्नलिखित शब्दों में की है → "गुर्जर राजा के पास असंख्य सेनाएं हैं। किसी भी भारतीय राजकुमार के पास इतनी प्रशिक्षित घोड़ों की सेना नहीं है। राजा के पास अपार धन राशि है। राज्य में सोने, चांदी की खाने हैं और भारत में कोई दूसरा राज्य ऐसा नहीं है जो गुर्जर प्रदेश की भांति सुरक्षित हो"

मिहिर भोज के शासन काल की जो मुद्राएं प्राप्त हुई हैं, उनमें मिश्रित चांदी का प्रयोग हुआ है जिससे विदित होता है कि लगातार युद्धों के कारण राज्य की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी न रही होगी।

राजा कुलीन धर्म का प्रेरक विरोधी था और विदेशी नव-शक का उपासक था। डा० मजूमदार भोज के बारे में लिखते हैं →

Bhoja had the reputation of strong ruler able to maintain peace in his Kingdom and defend it against external danger. He stood as bulwork of defence against Muslim aggressio and left this task as a sacred legacy to his successors"।

डा० पुरी उसकी प्रशंसा निम्नलिखित शब्दों में करते हैं → "He had inherited a crippled Kingdom in an adverse situation but his strong hand steered him clear of over half a century. At his death, he left a consolidated and organised empire for his son and successor Mahendrapala."

लेखा की प्रशस्ति के अनुसार 885 ई० के लगभग इसकी मृत्यु हुई। इस प्रकार अपने दीर्घकाल के शासन में मिहिर भोज ने प्रतिहार राजाओं की शक्ति को फिर से संगठित किया और एक बड़े साम्राज्य की पुनः स्थापना की। अपने राज्य की भिन्न-भिन्न प्रदेशों के उसने योग्य सामन्तों को नियोजित किया जो प्रशासन कार्यों में और युद्धों में निपुण थे।

— × — × —

Scanned with CamScanner